

इवम् M. 11, 244. BHAG. 1, 39. फलमथ प्रपश्यस्व कर्मणास्तस्य MBh. 9, 1550. स्वप्नान् Traumgesichter sehen ÇAT. 14, 5. blicken: भुञ्जगुकुटिलां रोषाद्भुक्तो भृशदारुणाम् । कृत्वासीन् प्रपश्यत् R. 5, 89, 2. ansehen, anschauen: व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य BHAG. 11, 49. अहं न विस्मयं विप्र गच्छामोति प्रपश्य माम् MBh. 9, 2232. BHAG. P. 3, 19, 28. 4, 9, 3. sehen so v. a. kennen: ऋते सुपर्णराजात् — न तदूतं प्रपश्यामि यो मां द्रुतमनुव्रजेत् R. 5, 3, 63. ansehen so v. a. beurtheilen: क्रुद्धो हि कार्यं सुभ्राणि न यथावत्प्रपश्यति MBh. 3, 1082. eine Ansicht —, eine Meinung haben: सो ऽहमेवं प्रपश्यामि वासुके भगिनी तव । जर्त्कारुरिति ध्याता तौ तस्मै प्रतीपाद्य ॥ 1, 1639. eine richtige Einsicht haben: प्रपश्यन् 7, 1057. प्रपश्यमान 3, 752.

— अभिप्र hinausschauen auf, sich umsehen nach: प्रापश्यद्दीरो अभिप्रास्यं रणाम् RV. 10, 113, 4.

— संप्र sehen, gewahr werden, schauen: पद्युष्मानिह — विमुक्तान्संप्रपश्यामि MBh. 3, 15050. 7, 6194. जीवो निष्क्रान्तमात्मानं शरीरात्संप्रपश्यति 14, 581. तत्सर्वं धर्मवीर्येण यथावत्संप्रपश्यति R. 1, 3, 4. ansehen, betrachten: तथा च विद्वांसस्तं संप्रपश्यति बुद्ध्या MBh. 3, 795. wissen, kennen: नहि तं संप्रपश्यामि यः प्लवेत मकार्षवम् । अन्वयत्र गुरुडात् R. 5, 70, 3. न कर्षात्संप्रपश्यामि वाक्यस्योत्तरं क्वचित् MBh. 3, 8445. ansehen für, halten für: तद्यद्यं संप्रपश्यामि 12, 414.

— प्रति entgegenblicken, anblicken, erblicken, sehen, gewahr werden: उद्यत्तं त्वा प्रति पश्येम सूर्यं RV. 10, 37, 7. 138, 5. AV. 4, 20, 1. 5. 7, 13, 2. अतिथीन् 9, 6, 3. अतो देवीः प्रतिपश्याम्यापः AIT. Br. 8, 27. ÇAT. Br. 6, 3, 4, 23. LĀṬJ. 4, 11, 10. अनुपश्य यथा पूर्वं प्रतिपश्य यथापरे KATHOP. 1, 6. दक्षिणास्यां दिशि यमं प्रत्यपश्यं व्यवस्थितम् MBh. 3, 12005. 7, 3944. 8, 1242. 12, 9760. 16, 162. N. 12, 18. sehen so v. a. kennen: नहि — सैन्ये ऽस्मिन्प्रतिपश्यामि य एनं विषद्व्युधि MBh. 3, 2021. sehen so v. a. erleben, erfahren: नाप्रियं प्रतिपश्येयुः 12, 12548. med. (im eigenen Besitz) sehen: बद्धं वलिं प्रति पश्यासा उग्रः AV. 3, 4, 3.

— वि (an verschiedenen Orten, im Einzelnen) sehen, unterscheiden, kennen: मया सो अन्नमति यो विपश्यति RV. 10, 125, 4. सं चेदं वि च पश्यसे 158, 4. 5. AIT. Br. 1, 6. TS. 2, 2, 9, 3. विपश्यति पशवो ज्ञापमानाः 4, 3, 44, 3. AV. 19, 53, 6. यावत्सूर्यो विपश्यति 10, 11, 34. KATHOP. 4, 6 (med.). मनसैव पुरे देवः पूर्वद्वयं विपश्यति BHAG. P. 6, 1, 48. विपश्यतां (gen. pl.) लोकाविधिम् 7, 2, 37. bemerken, wahrnehmen: देहे च तं न चरमः स्थित-मुत्थितं वा सिद्धो विपश्यति 3, 28, 37. गुणान्विपश्यत्युत वा तमश्च 9, 8, 22. betrachten: स सत्त्वमेवं परितो विपश्यन् 7, 8, 19. erblicken, gewahr werden, kennenlernen: न दृष्टपूर्वं कल्याणं सुखं वा पतिपौरुषे । अपि पुत्रे विपश्येयम् R. 2, 20, 36. अपि व्यपश्यस्त्वमन्नस्य मायाम् BHAG. P. 8, 12, 43. das partic. विस्पष्ट s. bes.

— अनुवि erblicken, beschauen: तमेव उद्यन्ननुविपश्यति ÇAT. Br. 6, 7, 3, 4. ते ऽसुरात्रात्रिं तमः प्रविष्टान्नुद्ययश्यन् PANKAV. Br. 9, 1, 1.

— अभिवि anschauen, erblicken: ये विश्वाभि विपश्यति भुवनां स च पश्यति RV. 3, 62, 9. यावन्ति ऽभि विपश्यामि भूमे सूर्येण मेदिना AV. 12, 1, 33. अमे वि पश्य बृहताभि राया blicke her RV. 3, 23, 2. — ÇAT. Br. 1, 1, 2, 21. Nir. 7, 22. 10, 22. 46. 12, 24.

— सम् 1) gleichzeitig erblicken, überblicken: यो विश्वाभि विपश्यति भुवनां स च पश्यति RV. 3, 62, 9. 10, 25, 6. 117, 8. 139, 1. 158, 4. TS. 1, 5,

6, 1. AV. 13, 2, 44. erblicken, gewahr werden, sehen, erkennen: महान्ति चान्यानि सरांसि पार्थाः संपश्यमानाः प्रययुरारुष्याः MBh. 3, 12338. act. 12371. 7, 1822. 9, 2894. R. 2, 54, 3. 5, 9, 6. BHAG. P. 3, 9, 8. यथैव ऋणो ह्यरात्संपश्यामस्तथात्तिकात् 9, 24, 9. सर्वमात्मनि संपश्येत्सच्चासच्च समा-हितः M. 12, 118. BHAG. P. 9, 21, 6. सिद्धिमेकस्य संपश्यन् M. 6, 42. यदि तत्रापि संपश्येद्दोषम् 7, 176. संपश्य तपसो बलम् MBh. 3, 14031. ध्यानयोगेन संपश्येत्सूत्रम् अत्मात्मनि स्थितः JĀG. 3, 64. यस्य संपश्यतः vor wesen Augen M. 7, 143. HARIV. 7464. BHAG. P. 8, 3, 33. 18, 12. auf Jmd oder Etwas sehen, anschauen, besichtigen: बाहू विशालौ संपश्यन् MBh. 2, 2623. 3, 869. संपश्यन्नासिकाद्यं स्वम् MĀH. P. 39, 31. प्रस्थितं वनवासाय संपश्य कुशलेन माम् R. GORR. 2, 35, 20. संपश्येम भोगचयं महान्तं सहास्माभिर्धृतराष्ट्रस्य राज्ञः MBh. 3, 743. अलंकृतश्च संपश्येदायुधीयं पुनर्ननम् । वाक्यानि च सर्वाणि शस्त्राण्याभरणानि च ॥ M. 7, 222. Jmd sehen so v. a. mit Jmd zusammenkommen, Jmd vor sich lassen: उत्तिष्ठ शक्र संपश्य देव-षोश्च समागताम् MBh. 3, 498. R. 2, 34, 34. seine Aufmerksamkeit auf Etwas richten, betrachten, erwägen: ध्यानयोगेन संपश्येद्भक्तिमस्यात्तरा-त्मनः M. 6, 73. लोकसंप्रकृमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि BHAG. 3, 20. सो ऽस्य कार्याणि संपश्येत्सभ्यैरेव त्रिभिवृतः M. 8, 10. 45. R. 2, 111, 23 (121, 9 GORR.). इहं त्विदानीं संपश्य केनोपायेन मन्थरे । भरतः प्राप्नुवाद्वाज्यम् 9, 3. ansehen für: यस्यास्तुल्यं पतिं सोम उतथ्यं समपश्यत MBh. 13, 7241. मित्रं हिरण्यं भूमिं वा संपश्यन्त्रिविधं फलम् M. 7, 206. med. sich (gegenseitig) ansehen: सं देवि देव्योर्वश्या पश्यस्व TS. 1, 2, 5, 2. यत्र देवाः सम्पश्यन्त विश्वे sich beisammen sehen, — befinden RV. 10, 82, 5. ansichtig werden: संपश्यमाना अमदन्नभि स्वम् 3, 31, 10. med. intrans. P. 1, 3, 29, VĀRT. 2. VOP. 23, 14. — 2) überzählen, recapitulieren, zusammenzählen: एवं या इष्टा देवता भवति ताः संपश्यत्यसौ क्विरनुषतासौ क्विरनुषतेति ÇAT. Br. 1, 9, 4, 10. 2, 2, 3, 7. 1, 7, 3, 10. 4, 3, 5, 20. berechnen: षड्द्वैर्हि मासान्संपश्यति TS. 7, 5, 6, 1. ऋतुभिर्देव गर्भे सत्तं संपश्यत्युत्-भिर्जातम् ÇAT. Br. 7, 4, 3, 31.

2. पम् nom. s. u. 2. पद् 1. am Ende.

3. पम्, पाशपति s. पाशय्.

4. पम् P. 7, 4, 86. intens. पम्पश्यते, पम्पशीति ebend. VOP. 20, 8. Nach dem Schol. zu P. eine Sautra-Wurzel; vgl. WESTRAC. in DĀTUP. 21, 22.

पशव्यं (von पम्) 1) adj. pecuarius, zum Vieh gehörig, für das Vieh dienlich, — geeignet, auf die Herde sich beziehend: पशव्यमूषरमितपाहुः ÇAT. Br. 2, 1, 1, 6. पाकयज्ञः 3, 1, 21. 11, 4, 2, 2. 4, 8, 7, 3, 1. देश JĀG. 1, 320. MBh. 1, 2341. — KĀND. UP. 2, 22, 1. शस्त्र AIT. Br. 6, 24. हिरात्र TBr. 1, 8, 10, 3. Agni 1, 8, 4. 2, 1, 2, 2. जगती कन्दसो पशव्यंतामा TS. 6, 1, 6, 2. 3, 3, 5. काम die Geschlechtsliebe, die Befriedigung des Geschlechtstriebes BHAG. P. 8, 3, 42. Zur Erklärung von पुरीष, पुरीष्य ÇAT. Br. 6, 4, 4, 7. 3. अपशव्यं TBr. 1, 8, 10, 3. ÇAT. Br. 11, 1, 5, 1. 7, 3, 1. ÇĀṆKB. GRAM. 1, 18. — 2. u. Herde, Viehstand: तवेदं विश्वमभितः पशव्यं पश्यति चतस्रा सूर्यस्य RV. 7, 98, 6. — Vgl. परिपशव्यं.

1. पम् 1) oxyt. UṆĀDIS. 1, 28. m. a) gen. पश्याम्, später पशोस्, dat. पशे (RV. 1, 43, 2. 8, 5, 20. 10, 35, 12; vgl. P. 7, 3, 109, VĀRT. (Sch.) und पश्वे (RV. 3, 62, 14 und in der ganzen späteren Literatur); instr. पश्या, später पशुना, acc. pl. पश्याम् und पशून् (nur dieses in der späteren Sprache); du. ved. पश्या. Vieh, pecus, sowohl das einzelne Stück als